डॉ० अनुजा कुमारी
(इतिहास विभाग)
एस० एन० एस० आर० के० एस कॉलेज
सहरसा

Scanned with CamScan

(13) प्रश्न :- जॉर्ज तृतीय की उपलब्धियों पर प्रकाश डाले ।

उत्तर :- इंगलैंड के संवैधानिक इतिहास मे जॉर्ज तृतीय का स्थान महत्वपूर्ण है क्यो कि उसका 60 बर्ष दीर्घ कालीन शासक अनेक घटनाओ से परिपूर्ण था । अमेरिका ने जो ब्रिटेन मे विस्तृत सम्राज्य प्राप्त किया था इस से वहाँ औपनिवेसिसक निति के विरुध असंतोष व्याप्त था जिसके परिणाम स्वरूप स्वतंत्रता अमेरिका का स्वतंत्रता का संग्राम हुआ साथ ही अमेरिका ब्रिटिश सम्राज्य से अलग भी हो गया था दूसरी तरफ भारत मे अंग्रेजो ने एक अलग सम्राज्य की नीव डाल चुकी थी । इतना ही नही बल्कि फ्रांस की राज्य क्रांति ने सम्पूर्ण युरोप को खतरे मे डाल दिया ऐसी स्थति मे ब्रिटेन को उससे भंयकर संघर्ष करना पड़ा । नतीजा यह हुआ कि समाजिक और आर्थिक दृष्टि से बिटेन औद्योगिक क्रांति के कगार पर पहुँच चुका था । इसी समय जॉर्ज ने राजा का अधिकार का प्रश्न उठा दिया । दूसरी बात यह है कि जॉर्ज द्वितीय की पुत्र फ्रेडिक की इस समय मृत्यु हो चुकी थी । ऐसी स्थिति मे उसका पोता जॉर्ज तृतीय के नाम से 1760 ई० में इंगलैण्ड के गद्दी पर बैठा ।

जॉर्ज तृतीय एक लोकप्रिय शासक था जिस समय वह इंगलैंड की गद्दी पर बैठा था उस समय वह 22 बर्ष का

युवक था। उसका व्यवहार सबों के साथ सादा एवं सरल था। लेकिन उसकी यह विशेषता तो यह है कि वह अपनी पत्नी से प्रेम कुछ ज्यादा करता था। यहाँ तक कि शिक्षणिक व्यवस्था का सवाल है। उसमें उसका पुस्तकालय बड़ा विशाल था। वह बराबर कहा करता था कि मैं ब्रिटेन का रहने वाले हुँ। यह कहने मे मुझे गर्व होता है कि वह स्वयं कहता था कि,

Remember ~~Rimember~~ my lord that it is you who desert me not I you.

① ह्विग दल की समाप्ती – जॉर्ज शासन सत्ता को अपने हाथ मे लेकर ~~सिंहास~~ सिंहासन पर बैठा था। इसक्रम मे उन्होने सबसे पहले ह्विगदल की सत्ता को समाप्त करना चाहा लेकिन इसक्रम मे वे तेज एवं उत्साहित्य युवक था। सबसे पहले वह ह्विगदल से स्वभाव बनाया वैसे भी ह्विगदल के लोग रिश्वत ~~भ्रष्टाचार~~ भ्रष्टाचार और लोकसभा के चुनावी मे बेमानी करने के कारण बदनाम हो चुका था। जॉर्ज का एक मात्र उद्देश्य पार्लियामेण्ट को अपने अधिकारों मे लेना था लेकिन इसके लिए सबसे पहले ह्विगदल की समाप्ती आवश्यक थी। इसक्रम मे उन्होने सबसे पहले काम इंगलैंड मे यह किया कि पार्लियामेण्ट का चुनाव करवाया यह चुनाव ह्विगदल की शान्ति पर एक कठोर अघात था। लेकिन चाहकर भी ह्विग दल के लोग इसका विरोध नही कर

सके क्यों कि संवैधानिक अधार पर राजा अपने अधिकारों के लिए स्वतंत्र होता है किसी दल वाले से किसी काम के लिए राय नही लेनी पड़ती चुनाव होने के तुरंत बाद द्विगदल की स्थिति वहाँ चरमराने लगी जिस बात को जार्ज तृतीय भली भाँति से जनता था और इसीलिए तो उन्होने चुनाव भी करवाया था। ऐसी स्थिति में जार्ज का जो मकसद था वह पुरा हो गया और द्विगदल की समाप्ती हो गई।

(ii) न्यु कैसिल मंत्रिमण्डल — जॉर्ज तृतीय के गद्दी पर बैठने के समय में वहाँ न्युकैसील संयुक्त मंत्रिमण्डल कार्य कर रहा था। लेकिन 1761 ई० में कुछ ऐसी परिस्थतियाँ आई जिससे की इस ~~मंत्रि~~ मंत्रिमण्डल के सदस्य अपने आप के बीच उलझ गये। दूसरी बात यह है कि जॉर्ज तृतीय की न्यु कैसील ने अपना पद छोड दिया क्यों कि अब उलझन भरी स्थिति में उसके सामने बहुत सारी समस्याये खड़ी हो चुकी थी। जिसे कि उसके सदस्य झेल नही सके। अन्त: उन्होने लचार एवं व्यवस्थ हो कर इस मंत्रिमण्डल से त्याग पत्र दे दिया। अत: हम कह सकते है कि जॉर्ज का जो मकसद था पुरा हो गया क्यों कि जॉर्ज ह्वग्स सत्ता की समाप्ती के बाद इसे मंत्रिमण्डल का भी समाप्ती ~~के लिए~~ चाहता था। लेकिन इसकी समाप्ती के लिए जार्ज तृतीय को विशेष प्रयास नही करना पड़ा

(III) जार्ज (Greand Whell) – जॉर्ज ग्रेन्ड व्युल दल का नेता पिट का संबधी था। उसके समय में दो ऐसी घटनायें घटी जिसके फलस्वरूप वहाँ के राजा और प्रजा विरोधी हो गये। उसके समय में पहली घटना तो यह घटी भी अमेरिकी स्टाव ऐकर लागु किया गया था। जिसका वहाँ घोर विरोध हुआ। और दूसरी घटना जोन विल्कस का मुकदमा था। क्यों कि जोन साहब पार्लियामेण्ट के प्रथम अधिवेशन दिये थे। उसमे उन्होंने राजा साहब का घोर अलोचना भी की थी। लेकिन जेन व्युल के राजा का अपमान माना और ऐसी स्थति में उन्होंने 49 व्यक्ति को बिना वारंट का गिरफ्तार कर कैद कर दिया। जिससे वहाँ के लोग इससे नराज हो गये लेकिन इसके साथ ही साथ ~~इसी~~ दूसरी बात यह भी है कि ग्रेन्ड व्युल की काफी बदनामी हो चुकी थी। ऐसी स्थिति में ल्चार एवं व्यवस्थ होकर कोई रास्ता नजर नही आत ग्रेन्ड व्युल को त्याग पत्र ~~दिया~~ देना ही पड़ा

(IV) लॉर्ड नॉर्थ का मंत्रिमण्डल – जॉर्ज को अब वहाँ अपनी इच्छा के हिसाब से शासन सत्ता में मंत्रीमण्डल मिला था जिसकी चाह उसे बहुत दिनें से थी। यदि मंत्रिमण्डल उसे पहले मिलता तो शायद इंगलैंड बहुत क्षेत्र में आगे बढ़ जाता है। लेकिन हमें इस संबध में यह भी मनना होगा कि विद्वानों का यह कथन सत्य प्रतित होता है कि समय से पहले कुछ नही होता जिस समय लॉर्ड मंत्रिमण्डल